प्रकाशन तिथि : 15 सितम्बर, 2021
प्रेषण तिथि : 19 सितम्बर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 13 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

समारोहपूर्वक मनाई संत मूलचंद जी की जयन्ती

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित किए जा रहे 75 बड़े कार्यक्रमों के क्रम में जैसलमेर संभाग में संत शिरोमणि मूलचंद जी की जयंती 30 अगस्त को झिनझिनयाली में संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय भगवान सिंह जी ने कहा कि संत मूलचंद जी एक आदर्श संत हुए हैं। उनका चमत्कारिक जीवन नमन करने योग्य है। उन्होंने कोई युद्ध नही लड़ा, लेकिन उन्होंने लोगों की सेवा की और उनके उसी तपस्वी जीवन के कारण हम आज उनकी जयन्ती मना रहे हैं। हमें यह समझने की आवश्यकता है सिर्फ राजपूत के घर जन्म लेने से ही

क्षत्रिय नही बना जा सकता बल्कि उसके लिए हमारे भीतर सोये क्षत्रियत्व को जगाना पड़ता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें इसी प्रकार जागृत कर क्षत्रिय बनाना चाहता है, हममें मानवीय मूल्यों का विकास करना चाहता है जिससे हम भटकते संसार को मार्ग दिखा सकें। हमारे अंदर जो रावण बैठा है, जो राक्षसी प्रवृत्ति है, संघ उसको दूर करने का काम करता है। हम गांव में ठाकुर जी का मंदिर बनाते हैं, उनकी पूजा करते हैं। इसी तरह पहले गांव में भी जो ठाकुर होते थे, उनमें ईश्वरीय भाव होता था। वह सबको समभाव से देखते थे और उनके सुख-दुख में काम आते थे। उसी ईश्वरीय भाव को हमें अपने अंदर लाना है क्योंकि उसके बिना हमारा क्षत्रियत्व अधूरा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ख्याला मठ के महंत गोरखनाथ जी ने कहा कि संत शिरोमणि मूलचंद जी हम सबके आदर्श हैं और उनके जीवन से हम सभी को प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। इतिहासकार रिडमल सिंह झिनझिनयाली ने संत श्री मूलचंद जी के जीवन-चरित्र के बारे में बताया तथा मूलचंद जी द्वारा प्रजापालक के रूप में की गई सेवा की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि मूलचंद जी ठाकुर जी के अनन्य भक्त थे। संघ के वरिष्ठ स्वंयसेवक गोपाल सिंह रणधा ने उपस्थित समाजबंधुओं से श्री क्षत्रिय युवक संघ जुड़ने का आह्वान किया। कैलाश कंवर ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सबको संघ में आकर शिक्षण लेना चाहिए। उन्होंने समाज में बालिका शिक्षा की आवश्यकता पर भी जोर दिया। मूल सिंह झिनझिनयाली ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पांच दिन और नौ प्रशिक्षण शिविर

सैंकड़ों स्वयंसेवकों ने लिया प्रशिक्षण

कोरोना के कारण उत्पन्न अवरोध के शिथिल होने के बाद पुनः प्रारम्भ हुआ शिविरों के आयोजन का क्रम जारी है। 27 से 31 अगस्त की अवधि में विभिन्न स्थानों पर संघ के नौ प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए जिनमें सैंकड़ों स्वयंसेवकों के व्यक्तित्व को निखारने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। बाड़मेर संभाग के चौहटन प्रान्त में वैर माता तलहटी मंदिर के प्रांगण में 27 से 30 अगस्त तक चार दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। भगवान सिंह दुधवा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि व्यक्ति के जीवन में सिद्धांतों का होना आवश्यक है। बिना सिद्धान्त का जीवन महत्त्वहीन बन जाता है। संघ हमें क्षात्रधर्म के शाश्वत सिद्धांतों का अभ्यास करवा रहा है। इस अभ्यास के द्वारा हमें क्षत्रियत्व को अपने आचरण में लाना है। हमारी कथनी और करनी में किसी प्रकार का अंतर नहीं होना चाहिए, तभी हम अपने पूर्वजों की महान परंपराओं के सच्चे वाहक बन सकेंगे। शिविर में जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, चौहटन आदि क्षेत्रों से युवा सम्मिलित हुए। संभागप्रमुख महिपाल सिंह चूली स्वयंसेवकों सहित शिविर में उपस्थित रहे। शिविर के दौरान संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में एक पारिवारिक स्नेहमिलन भी आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि परिवार में माता की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उसे अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाते हुए संतान में संस्कार निर्माण का भी दायित्व निभाना होता है। इसलिए माता को अत्यंत सजग और सावधान रहते हुए परिवार को संभालना होता है। आज की बालिका ही कल की माता है इसलिए उसे शिक्षा के साथ संस्कार भी प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

नापासर (बीकानेर)

माननीय संरक्षक श्री का प्रवास

जैसलमेर, बीकानेर, नागौर, जयपुर व जोधपुर के सहयोगियों से मिलन

जोधपुर

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 30 अगस्त से 1 सितंबर तक जैसलमेर संभाग में प्रवास पर रहे। 30 अगस्त को प्रातः 11 बजे झिनझिनयाली में आयोजित संत श्री मूलचंद जी जयन्ती समारोह में सम्मिलित हुए तथा इसके पश्चात कांवराज आश्रम में स्वयंसेवकों के परिवारों से भेंट की। तत्पश्चात तनाश्रम (जैसलमेर) पहुंचकर रात्रि विश्राम किया। 31 अगस्त को प्रातः 11 बजे संभागीय कार्यालय तनाश्रम में उनके सान्निध्य में पारिवारिक स्नेहमिलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित स्वयंसेवकों व उनके परिवारजनों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इतिहास में जब कभी क्षत्रिय अपने पथ से विचलित हुआ है तब उसे पुनः सन्मार्ग पर लाने का कार्य नारी ने ही किया है। नारी ही किसी भी समाज की वास्तविक निर्माता है। नारी के सहयोग के बिना कोई भी व्यक्ति अपना विकास नहीं कर सकता। भोजदेव की माता का पुत्र को दिया उलाहना हो या हाड़ी रानी का अपना शीश काटकर पति को कर्त्तव्य-पालन की प्रेरणा देना हो, हमारा इतिहास नारियों के त्याग और बलिदान से भरा हुआ है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पांच दिन और नौ प्रशिक्षण शिविर

(पेज एक से लगातार)

इसी आवश्यकता की पूर्ति संघ अपनी शाखाओं, शिविरों, स्नेहमिलनों और दंपति शिविरों का माध्यम से कर रहा है।

बीकानेर संभाग में सींथल (नापासर) स्थित रघुकुल बी एल मोहता लर्निंग इंस्टीट्यूट में तीन दिवसीय शिविर 28 से 30 अगस्त तक आयोजित हुआ। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सहयोगियों के लिए आयोजित इस शिविर का संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमने अपने आपको देखना बंद कर दिया इसलिए हम अनेक काम बेहोशी में करते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन तीन दिनों में हमारे होश को जागृत करेगा जिससे हम किसी भी काम को करने से पहले उसकी सार्थकता जान सकें। शिविर के दूसरे दिन माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास का सान्निध्य भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। शिविर की व्यवस्था का दायित्व नवीन सिंह भवाद, गजेन्द्रसिंह लूंछ आदि ने बी एल मोहता संस्थान की प्रिंसिपल सरोज कंवर के सहयोग से सम्भाला। शिविरार्थियों के अतिरिक्त अन्य समाजबंधुओं के लिए प्रतिदिन शाम को 5 से 7 बजे तक शिविर में आकर उसकी गतिविधियों के बारे में जानने की व्यवस्था की गई थी। भाजपा जिलाध्यक्ष ताराचंद सारस्वत, पूर्व प्रधान छैलू सिंह शेखावत, नरेन्द्र सिंह भवाद, रतन सिंह नोसरियाँ सहित बीकानेर शहर के अन्य जातियों के गणमान्य जनों ने शिविर में आकर संघ के सम्बंध में जानकारी प्राप्त की। शिविर में 22 जिलों के 200 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई के समय शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए शिविर प्रमुख ने कहा कि इन तीन दिन में हमने एक अभ्यास को अंगीकार किया है, हम अभ्यास में प्रणत हुए हैं, पारंगत

नहीं, इसलिए बार बार ऐसे अवसरों का लाभ लेना है। बीकानेर संभाग के चुरू प्रांत के शिमला गांव में भी 28 से 31 अगस्त तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। प्रान्त प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि किसी भी समाज अथवा राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति निर्माण के माध्यम से ही सम्भव है। हम स्वयं को बदलेंगे तभी समाज और राष्ट्र भी बदलेगा। यह आत्मचिंतन से ही सम्भव है और संघ हमें आत्मचिंतन का अभ्यास करवा रहा है। 30 अगस्त को माननीय संघप्रमुख श्री ने भी शिविर का निरीक्षण किया। उनके सान्निध्य में एक स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें क्षेत्र के समाजबंधु सम्मिलित हुए। शिविर में पुन्दलसर, झंझेऊ, लखासर, रेड़ी, दस्सुसर, जालबसर, परसनेऊ, आलसर, जाखासर आदि के 121 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिमला ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। महाराष्ट्र संभाग में सूरत के नियोल गांव स्थित अंबाबा कॉलेज में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 28 से 30 अगस्त तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने कहा कि क्षत्रिय का जीवन त्याग से भरा होता है। उसका जीवन स्वयं के लिए न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए होता है। त्याग के इस भाव को हमारी कौम में फिर से जगाने के लिए संघ विगत 75 वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा है। कच्छ काठियावाड़ राजपूत समाज के अध्यक्ष प्रद्युम्न सिंह, वीर नर्मद यूनिवर्सिटी के कुलपति कोशोर सिंह चावड़ा, सूरत जिला मजिस्ट्रेट दलीप सिंह ने भी शिविर में पहुंचकर शिविरार्थियों से संवाद किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह कानेटी व प्रांतप्रमुख खेत सिंह चांदेसरा भी स्वयंसेवकों सहित शिविर में उपस्थित रहे। उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रान्त के भैंसाणा गांव में बालिकाओं का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 27 से 29 अगस्त तक सम्पन्न हुआ। जागृति बा हरदासकाबास ने शिविर का संचालन करते हुए उपस्थित बालिकाओं से कहा कि नारी परिवार की धुरी होती है। परिवार और समाज के निर्माण में उसका दायित्व गहन होता है इसलिए नारी का संस्कारित होना अत्यंत आवश्यक है। संघ हमें जो क्षत्रियोचित संस्कार दे रहा है उन्हें हमें अपने जीवन में उतारकर अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करना है। शिविर में 33 गांवों की लगभग 140 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभागप्रमुख विक्रम सिंह कमाणा व वनराज सिंह भैंसाणा ने व्यवस्था में सहयोग किया। उत्तर गुजरात संभाग के पाटण प्रान्त के कोरडा गांव स्थित श्री शान्तिधाम आश्रम शिक्षण संस्थान में भी 28 से 30 अगस्त तक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इंद्रजीत सिंह जैतलवासना ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि क्षत्रिय सदा से संसार का मार्गदर्शक रहा है। क्षत्रिय जिस ओर भी चलता है, संसार भी उसके पीछे चल पड़ता है। आज संसार में जो अराजकता, अत्याचार आदि दिखाई पड़ रहा है उसका कारण भी क्षत्रिय का अपने मार्ग से च्युत हो जाना ही है। संघ हमें फिर से उसी मार्ग पर चलाने का प्रयास कर रहा है। 26 गांवों के लगभग 100 युवाओं ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान 30 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भी मनाई गई। विदाई के दिन पूर्व विधायक दियोदर राजवी मानसिंह बापू, राजपूत विद्यासभा गांधीनगर के ट्रस्टी जटुभा वाघेला, उदयसिंह मोढेरा, वाघुभा वसई सहित अनेकों गणमान्य सज्जन उपस्थित रहे। दानसिंह सत्यार्थी सपरिवार व्यवस्था में सहयोगी रहे। जालोर संभाग के सांचोर प्रान्त में कीलवा स्थित श्री दुदेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में 28 से 31 अगस्त तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोडता ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमें ईश्वर ने क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है तो उसके हेतु को समझकर तदनुसार कर्म करके अपनी उपयोगिता को सिद्ध करें। हम जन्मना क्षत्रिय है तो हमें कर्मणा भी क्षत्रिय बनना है। इसके लिए प्रेय को छोड़कर श्रेय की ओर बढ़ना आवश्यक है। उसी का अभ्यास हमने यहां शिविर में किया है। शिविर में कीलवा, बावरला, सिवाड़ा, जाखड़ी, कावतरा, कारोला, झाब, आकोली आदि गांवों के राजपूत युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 30 अगस्त को आस पास के गांवों के समाजबंधु शिविर में पहुंचे व अर्थबोध के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। राव मोहन सिंह चितलवाना, राव लोकेंद्र सिंह, महेन्द्र सिंह व कल्याण सिंह बावरला ने अपने विचार रखे। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रान्त के देवीकोट गांव में आशापूर्णा मंदिर में 28 से 31 अगस्त तक चार दिवसीय शिविर आयोजित हुआ जिसका संचालन रतन सिंह बडोडागांव ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि जो सत्य और न्याय के लिए संघर्ष करें वही क्षत्रिय है। बाह्य जीवन में इस संघर्ष में जुटने से पहले यह आवश्यक है कि हम अपने भीतर सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करें। इसके लिए अपने भीतर के अंधकार को हमें साधना द्वारा दूर करना होगा। शिविर में 6 जिलों के लगभग 150 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। उगम सिंह लूणा ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। संभाग के झिनझिनयाली गांव के भगवती मरु विकास संस्थान के प्रांगण में भी 27 से 30 अगस्त तक चार दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित हुआ।

शिविर संचालक ईश्वर सिंह बैरसियाला ने शिविर में उपस्थित युवाओं से कहा कि संघ चरित्र निर्माण का काम कर रहा है। हमारे पूर्वजों ने जो गौरवशाली इतिहास बनाया है उसको अपने जीवन मे उतारें तथा उनसे प्रेरणा लें। हमारे पूर्वजों ने त्याग, बलिदान, शौर्य और वीरता के साथ इस राष्ट्र की सुरक्षा की। हम उनकी महान थातियों को सहेजकर अपने नैतिक चरित्र का उत्थान करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने आप को सुधारने की व अपना जीवन को बदलने की बात करता है। शिविर में संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। शिविर में लगभग 100 युवाओं ने संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जाति और जातिवाद विषय पर विचार गोष्ठी

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन जालोर द्वारा 8 सितंबर बुधवार को जालोर स्थित सीनियर सिटीजन पार्क में सभी जातियों के गणमान्य लोगों की एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें जाति एवं जातिवाद विषय पर चर्चा की गई। विचार गोष्ठी में ईश्वरलाल शर्मा, मधुसूदन दवे, मानवेंद्र राजपुरोहित, अर्जुनसिंह उज्जवल, पुरुषोत्तम पोमल, सरदारसिंह चारण, पदमाराम चौधरी, भैराराम चौधरी, चंपालाल प्रजापत, दिनेश भाटी, मोहनलाल परिहार, जयनारायण परिहार, चुन्नीलाल, श्रीराम बिश्नोई, चंद्रपाल बिश्नोई, दलपतसिंह आर्य आदि ने अपने

विचार रखते हुए बताया कि जातिवाद हमारे समाज की ज्वलंत समस्या है और इस कारण हमें सदैव हानि उठानी पड़ी है। जाति और जातिवाद दोनों को अलग अलग करते हुए हमें जातिवाद पर चोट करनी चाहिए। गोष्ठी में श्री क्षत्रिय युवक संघ का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए बताया गया कि पूज्य तनसिंह जी का मानना था कि जब तक गुणों और कर्मों की समानता रहेगी जातियां बनी रहेंगी और जाति रहेगी तो जातीय भाव भी रहेगा। इस जातीय भाव को सतोगुणीय बनाकर समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाना ही पुरुषार्थ का कार्य है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी कार्य में संलग्न है और चाहता है कि सभी जाति समाजों में ऐसा कार्य प्रारंभ हो। जातिवाद इस भाव का तमोगुणी स्वरूप है, विकृति है जिसे मिटाया जाना चाहिए। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि वर्षों से हम जातियों को मिटाने का प्रयास कर रहे हैं जो अस्वाभाविक है और इस अस्वाभाविक प्रयास का कोई परिणाम प्रकट नहीं हुआ जबकि जातिवाद लगातार बढ़ता जा रहा है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति व आधुनिकता पर विचार गोष्ठी

निर्भया नशामुक्ति संस्थान के तत्वाधान में 5 सितंबर को नाथद्वारा के निकट मुछाला महादेव मंदिर में गुरुकुल शिक्षा पद्धति और आधुनिकता के संयोग से अध्यापन की परिकल्पना पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में संभागीयों ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण की उपेक्षा करती है जबकि चरित्र निर्माण से ही श्रेष्ठ समाज और राष्ट्र का निर्माण संभव है। भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्यों की शिक्षा के लिए ऐसा केन्द्र स्थापित किया जाना चाहिए जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी सार्थक हो। गोष्ठी के संयोजक रघुराज सिंह झाला ने बताया कि इस विचार गोष्ठी में इस विषय पर गंभीरता से चिंतन किया गया एवं ऐसे संस्थान की संभावनाओं को तलाशा गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री जवाहिर राजपूत छात्रावास जैसलमेर के पूर्व छात्र व पूर्व अधीक्षक, समाज की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय रहने वाले ऊजार्वान युवा सहयोगी तथा जैसलमेर जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि

श्री उदयसिंह बडोड़ागांव

को

भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) जैसलमेर के

जिलाध्यक्ष बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छुः

- सवाई सिंह देवड़ा
- गिरधर सिंह जोगीदास का गांव
- मदन सिंह पोछिणा
- भोजराज सिंह तेजमालता
- रावलसिंह बडोडा गांव
- कुंदन सिंह राजगढ़
- जीवन सिंह नग्गो की ढाणी
- रघुवीर सिंह खारिया
- गायड सिंह लूणा
- किशन सिंह सलखा

संपादकीय

इतिहास और संस्कृति

इतिहास और संस्कृति का निकट संबंध है। संस्कृति का निर्माण इतिहास से ही होता है। विद्वानों ने संस्कृति की परिभाषा बताई है, 'भूषण भूत कृति, इति संस्कृति'। इस परिभाषा में इतिहास का संस्कृति से संबंध पुष्ट होता है। इसके अनुसार भूतकाल की ऐसी कृतियां जो मानव सभ्यता की आभुषण हैं, वे संस्कृति कहलाती हैं। इस प्रकार इतिहास में संस्कृति समायी होती है लेकिन संपूर्ण इतिहास संस्कृति का हिस्सा नहीं बन पाता। इतिहास में तो वे कृतियां भी शामिल हैं जो आभूषण नहीं हैं और जो आभुषण नहीं है वह संस्कृति में शामिल नहीं होते। महाभारत की हम बात करें तो द्रोपदी का चीर हरण इतिहास का तो हिस्सा है लेकिन वह हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं है। दूर्योधन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतिहास का तो भाग है लेकिन उसे हम हमारी संस्कृति का अंग नहीं मानते। संस्कृति की बात करते हैं तो हमें युधिष्ठिर, अर्जुन आदि पांडव व भगवान कृष्ण का स्मरण होता है। कर्ण का स्वर्णदान तो हमारी संस्कृति का हिस्सा बन जाता है लेकिन उनके द्वारा अभिमन्यु वध में दिया गया कायरता पूर्ण सहयोग संस्कृति का हिस्सा नहीं बन पाता। इसी प्रकार हम इतिहास की अन्य घटनाओं के उदाहरण ले सकते हैं। जगमाल हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं माना जाता लेकिन प्रताप हमारी संस्कृति के सिरमौर हैं। श्रद्धेय दुगार्दास हमारी संस्कृति के सिरमौर हैं लेकिन उन्हीं के समय हुए महाराजा अजीतसिंह हमारे सांस्कृतिक प्रतीक नहीं हैं। एक ही व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का सांगो पांग वर्णन इतिहास तो हो सकती हैं लेकिन संस्कृति हो, यह आवश्यक नहीं है क्योंकि संस्कृति तो गहना है, आभुषण है और आभुषण तो वही है जो शोभा बढाये। संस्कृति के बारे में यह भी कहा जाता है कि संस्कृति धर्म और सिद्धांत का क्रियात्मक पक्ष होता है। इस प्रकार संस्कृति में इतिहास की वे क्रियाएं शामिल होती हैं जिनमें धर्म और सिद्धांत की क्रियान्विति होती है। इसीलिए रावण द्वारा सीता माता का हरण संस्कृति का हिस्सा नहीं है लेकिन भगवान राम द्वारा अपनी पत्नी का हरण करने वाले रावण को भी अपनी गलती मानकर सीता जी को लौटाने का आग्रह करना संस्कृति का हिस्सा है क्योंकि किसी दूसरे की भार्या का हरण करना धर्म और सिद्धांत नहीं बल्कि सिद्धांत हीन अधर्म है। इस दृष्टिकोण से भी इतिहास की वे घटनाएं जो धर्म और सिद्धांत के अनुरूप हैं वे ही संस्कृति का हिस्सा बनती हैं। इस संपूर्ण विवेचन से स्पष्ट है कि संस्कृति इतिहास का हिस्सा होती है लेकिन संपूर्ण इतिहास संस्कृति नहीं होता। साथ ही संस्कृति की यह विशेषता होती है कि यह नित्य अद्यतन होती रहती। यह इतिहास की तरह केवल ठहरी हुई, बीती हुई बात नहीं होती बल्कि जीवंत और प्रवाहशील होती है। इसमें देश, काल और परिस्थिति से निरपेक्ष जीवन मूल्यों की देश, काल और परिस्थिति से सापेक्ष क्रियान्वयन समाहित होता है। इसलिए यह इतिहास की तरह इतिवृत्तात्मक नहीं होती, केवल आदि से लेकर अंत तक का नीरस वर्णन नहीं होता बल्कि इसमें इतिहास का वह सूक्ष्म जीवन समाया हुआ होता है जिसके मूल्य कभी प्राचीन नहीं होते और जिनकी क्रियान्विति सदैव अर्वाचीन या नूतन बनी रहती है। इसलिए संस्कृति कभी प्राचीन नहीं होती बल्कि वह सदैव अर्वाचीन बनी रहती है और उसमें न बदलने वाले जीवन मूल्यों को लागू करने के लिए देश, काल और समय की आवश्यकता के अनुरूप बदलाव होते रहते हैं। इस प्रकार संस्कृति और इतिहास में प्रगाढ़ निकटता होने के बावजूद इनमें आधारभूत अंतर भी होता है। जब हम कहते हैं कि हमें हमारे इतिहास पर गर्व है और हमारा गौरवशाली अतीत हमारी महत्वपूर्ण संपत्ति है, हमारी थाती है तो इसका अर्थ यही होता है कि हमें हमारे इतिहास के उस पक्ष पर गर्व है जो हमारी संस्कृति बन गया है। हमारी संपत्ति हमारा वही गौरवशाली इतिहास होता है जो हमारी संस्कृति का अंग बन पाया है और वही हमारे लिए वरैण्य है। जालोर के किले का भेद देने वाला बीका दहिया हमारी संस्कृति का अंग नहीं है इसीलिए वह हमारे लिए गर्व का विषय नहीं है लेकिन उनकी पत्नी हीरा दे द्वारा अपने ही देशद्रोही पति को मृत्यु दंड देना हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमारे लिए गौरव का भी विषय है। इतिहास के अध्ययन का सही दृष्टिकोण यही है। इस दृष्टिकोण से यदि हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तब ही वह हमारे लिए शिक्षक बन पाता है और इतिहास का सर्वश्रेष्ठ उपयोग उसका शिक्षक बनना ही है। जो उसका अध्ययन एक विद्यार्थी के रूप में नहीं करते है उनके लिए उसका उज्ज्वल पक्ष जहां मिथ्याभिमान को बढ़ाने वाला होता है, अहंकार की विकृति को बढ़ाने वाला होता है वहीं उसका स्याह पक्ष आत्महीनता को बढ़ाने वाला होता है। एक जागृत व्यक्ति जब इतिहास का अध्ययन करता है तो उसका आत्म गौरव जागृत होता है और वह अपनी आत्म हीनता से मुक्त होता है लेकिन साथ ही वह स्याह पक्ष को जानकर उससे बचने की प्रेरणा भी लेता है। इतिहास में तो महाराणा प्रताप हैं तो जगमाल भी हैं। वर्षों से सोये हुए एवं आत्म गौरव से हीन समाज को इतिहास में से प्रताप का चरित्र स्वाभिमान के उच्च धरातल पर खड़ा होने की प्रेरणा देगा लेकिन साथ ही जगमाल का चरित्र उसे सावधान भी करेगा। हमारे साथ विडंबना यह है कि हम गौरव वाले पक्ष का उपयोग अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए तो करते हैं लेकिन स्याह पक्ष को नकार कर उससे सीख लेने की नहीं सोचते। आत्म गौरव अहंकार का पर्याय नहीं है, आत्म गौरव प्रकट करने के लिए नहीं होता, अन्यों पर श्रेष्ठता साबित करने के लिए नहीं होता बल्कि अपना स्वयं का महत्व समझने के लिए होता है और यदि हम उसको इस रूप में नहीं देखते हैं तो वह आत्म गौरव न होकर अहंकार बन जाता है जो हमारे पतन का कारण बनता है। जैसा कि हमने ऊपर के विवेचन में पढ़ा कि इतिहास का उज्ज्वल पक्ष संस्कृति होता है और संस्कृति जीवन मूल्यों का क्रियात्मक पक्ष है ऐसे में स्पष्ट है कि इतिहास के जिस उज्ज्वल पक्ष पर हम गर्व करने की बात करते हैं वह गर्व करने का विषय नहीं है बल्कि अनुकरण करने का विषय है। क्रियात्मक विषय है और यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो वह इतिहास का सदुपयोग नहीं है। हम हमारे आचरण को देखें, हमारे समाज के लोगों की सोच व दृष्टिकोण को देखें कि क्या हम इतिहास के उज्ज्वल पक्ष को संस्कृति के रूप में स्वीकार कर पा रहे हैं और यदि कर पा रहे हैं तो क्या हम उसके क्रियान्वयन पर भी विचार करते हैं, क्या उस क्रियान्वयन के लिए स्वयं को तैयार करने की दिशा में कोई प्रयत्न कर पा रहे है? अगर हम ऐसा नहीं कर पा रहे हैं और इतिहास को केवल गर्व का विषय ही समझ रहे हैं तो हमें इतिहास के कारण शर्मिंदा होने को भी तैयार होना चाहिए। यदि हम राणा सांगा की संतान के रूप में गर्व है तो हमें शिलादित्य को अपना पूर्वज स्वीकार कर शर्मिंदा होने को भी तत्पर होना चाहिए। इतिहास में हर गौरवदायी चरित्र के साथ हमें शर्मिंदा करने वाला चरित्र भी मिल ही जाएगा। इसलिए यह हमें निर्णय करना है कि क्या हमें इतिहास को केवल अतीत मानकर गर्व और शर्म का व्यापार करना है या उसके उज्ज्वल पक्ष 'संस्कृति' को क्रियान्वित कर अपने जीवन को उन मूल्यों से घूर्णित करना है जिनके बल पर हमारी संस्कृति महानता को अंगीकार कर पायी। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें उसी महानता को अंगीकार करवाना चाहता है और इसीलिए इतिहास का अध्ययन एक विद्यार्थी के रूप में करवा कर संस्कृति के देश काल और परिस्थिति निरपेक्ष मूल्यों की ओर बढ़ने का देश काल और परिस्थिति के सापेक्ष मार्ग उपलब्ध करवाता है।

क्षत्रिय मभासभा की तहसील ईकाई का गठन

मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान की झाड़ोल तहसील ईकाई का 6 सितंबर को राजपूत सभा भवन झाड़ोल में हुए चुनावों में गठन किया गया। इसमें फतेहसिंह पंवार को अध्यक्ष, शंकर सिंह झाला को उपाध्यक्ष व तेजेन्द्र सिंह को मंत्री निर्वाचित किया गया।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश में शिविर

श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर - महाराजा मुकुट सिंह संस्थान मोरना पश्चमी उत्तरप्रदेश में आगामी माह के 1 से 4 अक्टूबर 2021 तक होना तय हुआ है।

संपर्कः डॉ प्रमेन्द्र सिंह जी
81309 06919
प्रशांत सिंह मोरना 6395 068 289
नीरज सिंह मोरना 94123 93684
डॉ सुदेश सिंह जी मोरना
81262 66635
देवराज सिंह मांडणी 98739 68978
रेवत सिंह धीरा 9650250458

स्वामी का दर्शन व सत्संग लाभ

श्री क्षत्रिय युवक संघ के महाराष्ट्र सम्भाग व सूरत प्रान्त के स्वयंसेवकों ने परिवार सहित पालघर आश्रम में स्वामी जी के दर्शन व सत्संग का लाभ लिया। स्वामीजी ने स्वयंसेवकों को अपना संदेश देते हुए कहा कि जैसा भगवान सिंह जी कहते है वैसा करते जाओ।

समाज के नौ नये आर पी एस

राजस्थान पुलिस सेवा के नवनियुक्त अधिकारियों के लिए 12 सितंबर को दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। इस बैच में राजपूत समाज के जेठू सिंह करनोत कुसीप, सज्जन सिंह सांकड़ा, भवानी सिंह इंदा बस्तवा, रूप सिंह इंदा भालु, जितेंद्र सिंह राठौड़ गिलाकोर, जितेंद्र सिंह भाटी मगरा, श्रीमती मंगलेश चूंडावत बेमाली, श्रीमती कैलाश राठौड़ कुडली, सुश्री शिप्रा राजावत सहित 9 आर पी एस प्रशिक्षण प्राप्त कर उपाधीक्षक राजस्थान पुलिस बने हैं।

श्यामपुरा शाखा में जन्माष्टमी

गोहिलवाड़ संभाग के खोडियार प्रांत के श्यामपुरा गांव में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी हर्षोल्लास से मनाई गई तथा विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें शोभा यात्रा, मटकी फोड़, तलवारबाजी, सफाई अभियान आदि कार्यक्रम रखे गए। सह प्रांत प्रमुख घनश्याम सिंह वावड़ी, कृष्णसिंह थलसर, कर्मजीतसिंह श्यामपरा सहित सैकड़ों ग्रामवासियों ने इन कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता निभाई।

कार्य विस्तार बैठकों में दिया फाउंडेशन का संदेश

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यविस्तार बैठकों के क्रम में 5 सितंबर को उदयपुर के बी. एन. संस्थान स्थित कुंभा सभा भवन में उदयपुर जिले की बैठक रखी गई। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ, श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का परिचय देते हुए बताया गया कि राष्ट्र में आदर्श नेतृत्व के अभाव को दूर करने के लिए पू. तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। उनका मानना था कि योग्य अनुचर ही योग्य नेता बन सकता है। राजपूत जन्मजात नेता होता है लेकिन अनुचरत्व के अभाव में वह विघटन का कारण बनता है इसलिए उन्होंने अनुचरत्व और नेतृत्व दोनों के विकास के लिए व्यक्ति निर्माण की पाठशाला श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की और विगत 75 वर्षों से संघ शाबाशी और आलोचना की परवाह किए बिना अपने मूल काम में संलग्न है। लेकिन साथ ही संघ समाज सापेक्ष कार्य है इसलिए समाज की आवश्यकताओं के लिए भी यथाशक्ति क्रियाशील होता है। जब जब समाज की कोई आवश्यकता पड़ी, संघ ने उसके लिए अपने सामर्थ्य अनुसार प्रयास किया। राजनीति और

उदयपुर

समाज में समन्वय की ऐसी ही आवश्यकता के लिए 2001 में श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना की गई और उसने समाज में राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए काम किया। राजनीतिज्ञों को संरक्षण भी दिया और उनका समाज के लिए श्रेष्ठतम उपयोग हो इसके लिए एक व्यवस्था बनाने का प्रयास किया। ऐसी ही एक अन्य आवश्यकता के लिए 2019 में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का गठन किया गया जो समाज में व्यवस्था के प्रति नकारात्मकता को दूर कर उसके सकारात्मक पक्ष को समाज के सामने रखता है एवं हमारे महान पूर्वजों के जीवन मूल्यों के अनुरूप इस व्यवस्था का उपयोग करने को प्रेरित करता है। फाउंडेशन के इस उद्देश्य की ओर बढ़ने के लिए निर्धारित किए गए बिंदुओं की चर्चा करते हुए फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य यशवर्धन सिंह ने बताया कि हमारे में से अधिकांश लोग विभिन्न भ्रांतियों के चलते संघ से परिचित ही नहीं हो पाते। इसलिए फाउंडेशन का पहला कार्यबिंदु समाज की युवा पीढ़ी को संघ की विचारधारा से परिचित करवाना है। इसके अतिरिक्त संविधान में निहित हमारे पूर्वजों के मूल्यों से परिचित करवा कर उनका पालन करने को प्रेरित करना, समाज के विषयों को सरकार के समक्ष संवैधानिक तरीकों से उठाना भी इसके कार्यबिंदु हैं। अपनी स्थापना के पश्चात फाउंडेशन ने समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखा है। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में समाज से जुड़ी प्रतिभाओं के बीच समन्वय स्थापित कर उन्हें अधिकतम उपयोगी बनाने के लिए कार्य किया जा रहा है। अन्य समाजों के साथ हमारे समाज के स्वाभाविक सौहार्द को बनाये रखने के लिए भी विभिन्न कार्यक्रम किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में उपस्थित समाज बंधुओं ने विभिन्न प्रकार के सुझाव पेश किए गये और उनको इन सुझावों पर हो रहे कार्यों की जानकारी दी गई। उदयपुर में किस प्रकार फाउंडेशन के कार्य को गति दी जा सकती है इस विषय पर भी चर्चा की गई एवं दायित्व लेने वाले लोगों को चिह्नित किया गया। बैठक में उदयपुर में रहने वाले अधिकारियों, व्यवसायियों, शिक्षकों, महाविद्यालय शिक्षकों, राजनेताओं आदि सहित सभी क्षेत्रों में कार्यरत समाज बंधुओं ने भाग लिया। इसी क्रम में 10 सितंबर को नोखा तहसील की कार्य विस्तार बैठक श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा में रखी गई। बैठक में केन्द्रीय समिति के सदस्य राम सिंह चरकड़ा एवं संघ के नोखा प्रांत के प्रांत प्रमुख करणीसिंह भेलु ने फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली की जानकारी दी। बैठक में EWS प्रमाण पत्र बनाने की व्यवहारिक प्रक्रिया पर चर्चा की गई एवं अधिकतम समाज बंधुओं के प्रमाणपत्र बनाने का आग्रह किया गया। अजमेर जिले के अराई क्षेत्र की कार्यविस्तार बैठक बोराड़ा गांव में रखी गई। बैठक में क्षेत्र के सकारात्मक भाव वाले समाजबंधु एकत्रित हुए। फाउंडेशन के स्थानीय सहयोगी देशराज सिंह लिसाड़िया और भगवान सिंह जी देवगांव ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के परिचय, उद्देश्य, कार्य विस्तार एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व साथ ही समाज में संस्कार, सकारात्मकता, संगठन एवं एकता के सूत्र को श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा पिरोए जाने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।

थाटा में नागौर के जनप्रतिनिधियों की द्वितीय कार्यशाला

नागौर में हरसौर के निकट थाटा गांव स्थित भंवाल माता मंदिर में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में नागौर जिले के जनप्रतिनिधियों की द्वितीय कार्यशाला 12 सितंबर रविवार को संपन्न हुई। इस कार्यशाला में नागौर जिले की सभी पंचायत समितियों से पंचायती राज प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित जनप्रतिनिधि, निकटतम अंतर से हारे हुए उम्मीदवार व राजनीति में काम करने वाले अन्य समाज बंधु उपस्थित हुए। कार्यशाला में विगत मार्च माह में हुई कार्यशाला की जानकारी देते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषांगिक संगठन के रूप में फाउंडेशन का परिचय दिया गया। कार्यशाला का उद्धेश्य बताते हुए निवेदन किया गया कि नागौर जिले के राजनीतिक नेतृत्व के बीच समन्वय एवं सहयोग विकसित हो एवं वे साझा ताकत के रूप में समाज के विषय उठा सकें, इस हेतु आपस में विचार विमर्श कर साझा योजना बनाने के लिए यह कार्यशाला आयोजित की गई है। कार्यशाला में उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट साझा करते हुए बताया कि हमारी ही छोटी छोटी भूलों और अहंकार वश हमारा प्रतिनिधित्व कम हो जाता है, इसको रोकने के लिए हमें मिलकर प्रयास करना चाहिए। जिले की राजनीतिक स्थिति पर विचार रखते हुए वक्ताओं ने कहा कि आम मतदाता शक्तिशाली लोगों की ओर केन्द्रित होता है। उसको जब यह लगता है कि किसी भी प्रकार के अन्याय से ये हमारी रक्षा कर सकेंगे तभी वे हमारी ओर ध्रुवीकृत होंगे इसलिए हमें हमारे समाज या अन्य समाजों के साथ होने वाले किसी भी अन्यायपूर्ण व्यवहार के विरुद्ध मजबूती से एक समाज रूप में संवैधानिक तरीकों से आवाज के उठानी चाहिए और हमारी मजबूती का संदेश देना चाहिए। वक्ताओं ने कहा कि इस प्रकार के मिलन एवं विचार विमर्श हमारी निकटता बढ़ाते हैं और एक साथ मिलकर चलने को प्रेरित करते हैं इसलिए ऐसे मिलनों की आवृत्ति बढ़ाई जानी चाहिए और 6 माह की अपेक्षा प्रति तीन माह में ऐसी बैठक का आयोजन किया जाना चाहिए। सभी की सहमति से तीन माह बाद आगामी दिसंबर माह में शिवप्रताप सिंह जी ईड़वा के आतिथ्य में अगली बैठक निश्चित की गई। कार्यशाला में भैरुंदा प्रधान जसवंतसिंह थाटा, दिलीप सिंह बच्छवारी, चंचल जोधा, राजेंद्र सिंह धोलिया, नारायणसिंह गोटन, अंजु शेखावत, दलपतसिंह, किशोरसिंह, मगन सिंह, पन्ने सिंह, अजीतसिंह आदि अनेक जनप्रतिनिधियों ने अपने विचार साझा किए। लगभग 3 घंटे के विचार विमर्श के बाद सभी ने स्नेहभोज के समय अनौपचारिक चर्चा कर आगे की योजना बनाई। कार्यक्रम की व्यवस्था का जिम्मा भैरुंदा प्रधान जसवंतसिंह थाटा ने संभाला एवं नागौर जिले की फाउंडेशन की टीम ने उनका सहयोग किया।

थाटा (नागौर)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

29 अगस्त को रविवारीय वर्चुअल शाखा में पूज्य तनसिंह की डायरी के अवतरण संख्या 518 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि साधना मार्ग में जो लोग निष्क्रिय और उदासीन हो जाते हैं उनमें भी जो साधनागत प्रभाव पड़ते हैं, वे लंबे समय तक बने रहते हैं। लेकिन उन प्रभावों को पूर्णता तभी प्राप्त हो सकेगी जब लगातार संघ से सम्पर्क बना रहे। प्रत्येक साधक में भिन्न-भिन्न कर्म, सहयोग और स्वभाव के कारण इन प्रभावों की भी अनेकता होती है। यदि हम सक्रिय रहेंगे तो पूर्णता की ओर बढ़ेंगे और यदि हम निष्क्रिय या उदासीन हो गए तो प्रकृति उस अपूर्णता को शेष जीवन के लिए छोड़ देती है। आगे स्वयंसेवकों की जिज्ञासा एवं प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि हम अवसर का लाभ नहीं उठायेंगे तो उदासीनता बनी रहेगी। साधना में जो अवसर मिलते हैं उनका लाभ उठाकर ही हम सक्रिय हो सकते हैं। आत्म चिंतन व दृढ़ संकल्प से ही अवसर का सही समय पर लाभ उठाया जा सकता है। प्रकृति के अनुकूल कर्म में ईश्वर भी हमारी सहायता करता है। उसकी अहेतुकी कृपा प्रयत्नशील साधक को सदैव उपलब्ध रहती है। 5 सितम्बर को डायरी के अवतरण संख्या 524 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि सामुहिक शिक्षण व सम्पर्क से जिस सामाजिक भाव का विकास होता है, उसकी एक सीमा है। उससे आगे के विकास के लिए शिक्षक से निरन्तर निजी सम्पर्क बनाये रखेंगे तभी शिक्षक द्वारा आगे बढ़ने में सहायता प्राप्त होगी। संघप्रमुख व वरिष्ठजनों के निरन्तर सम्पर्क में रहकर, निष्काम कर्मयोगी बनकर निरन्तर आगे बढ़ते रहना ही साधक का कर्त्तव्य है। जो भी ऐसा नहीं करते हैं वे नये आने वालों के विकास में भी बाधक बनते हैं। इसलिए हमें चौमुखी कर्मठता का वातावरण तैयार करना होगा जिससे नये आने वाले निरन्तर आगे विकास कर सकें एवं जो रूके हुए हैं उन्हें भी चिन्तन द्वारा रूकावट को दूर करके आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी। इस संबंध में स्वयंसेवकों के प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने कहा कि हम अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करते हैं तो स्वयं का विकास तो बाधित होता ही है, अन्यों के लिए भी समस्या उत्पन्न होती है। प्रत्येक जीव का अन्तिम उद्देश्य ईश्वर तक पहुंचना है पर आज के वातावरण में इस मार्ग पर बढ़ने वाले बहुत कम होते हैं। साधना मार्ग में अनेको बाधाएं आती हैं, उन्हें पार करने से ही निरन्तर विकासशील रहना संभव है। निष्काम कर्मयोगी के रूप में साधनारत होवें, उसी में जीवन की सार्थकता है, संघ हमें उसी मार्ग पर बढ़ाना चाहता है। अर्थबोध शाखा में 02 सितम्बर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'पत्थर बतादे मुझको आज' पर चर्चा करते हुए माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा ने बताया कि संगति का असर पड़े बिना नहीं रहता, हम जैसे वातावरण में रहते हैं उसका प्रभाव हम पर पड़ता ही है। जलबिंदु यदि गर्म लोहे पर गिरता है तो तुरन्त भाप बन कर उड़ जाता है और वही जल बिन्दु यदि स्वाति नक्षत्र में सीप के मुंह में गिरता है तो बहुमूल्य मोती बन जाता है। मनुष्य पर भी संसर्ग का असर इतना ही गहरा होता है। पूज्य तनसिंह जी द्वारा स्थापित संघ में कई प्रकार के लोग आये, आ रहे हैं उनमें से कुछ लोग पत्थर के समान भी होते हैं। उनको कितना ही समझाया जावे पर असर नहीं होता। ऐसे जड़ लोगों के प्रति पूज्य श्री की व्यथा इस सहगीत में प्रकट हुई है। पत्थर जैसे जड़ बनकर बैठे स्वयंसेवकों को पूज्य तनसिंह जी कहते हैं कि मैंने अपने जीवन की सम्पूर्ण थाती, अपनी व्यथा तुम्हें सौंप दी है। स्वयंसेवक चाहे कैसे भी रहे हों लेकिन पूज्य श्री ने उन्हें सदैव पूजनीय माना। अपने हृदय के पवित्रतम भाव ऐसे स्वयंसेवको के सामने प्रकट किए लेकिन पत्थर जैसे स्वयंसेवक उस भाव को समझ ही नहीं पाते। पूज्य श्री साधक को कहते हैं कि तुम्हें जिस प्रकार का वातारण अच्छा लगता है वैसा ही वातावरण मैं संघ में बना दूंगा। तुम मेरे प्रिय हो अतः कब तक ऐसे निष्ठुर बने रहोगे? अकेले व्यक्ति से संघ नहीं बन सकता। गीत के अंत में पत्थर जैसे निष्ठुर स्वयंसेवकों को इंगित करते हुए कहते हैं कि यदि तुमने इस मार्ग को नहीं अपनाया तो समाज पुनः अपने खोये गौरव को कैसे प्राप्त करेगा। इस सहगीत में पूज्य श्री के भाव को समझकर हम अपना भी आकलन करें कि कहीं हम भी पत्थर की भांति जड़ बनकर संघ के प्रयासों को निष्फल तो नहीं कर रहे हैं। इसी प्रकार 09 सितम्बर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'प्यासे प्राणों की ज्योति' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस सहगीत में त्रिगुणात्मक प्रकृति में सत्वोन्मुखी रजोगुणीय साधक के भावों का वर्णन किया गया है। जो सदैव जाग्रत, सावधान, संकल्प बद्ध और पूज्य श्री प्रति समर्पित है ऐसा साधक पूज्य श्री के प्रति जो भाव रखता है उसका वर्णन इस सहगीत में है। ऐसा साधक मन, कर्म और वचन से केवल पूज्य श्री एवं संघ की चाह के अनुरूप कर्मरत रहता है। फिर चाहे कितनी ही बाधाएं, संकट आवें वह जीवन पर्यन्त इस मार्ग पर चलकर संघ कार्य करता रहता है। यह जन्म-जन्मातरों का संबंध है। साधक के लिए संघ सकारात्मकता का प्रेरक एवं दूगुर्णों को दूर करने वाला है। पूज्य श्री की प्रेरणा से स्वयं को निमित्त बनाकर जो भी इस मार्ग पर चलते हैं उनमें अकल्पनीय साहस व उत्साह का जन्म होता है। उनके प्रभाव से समाज में भी जाग्रति आती है। ऐसे साधक का यही भाव रहता है कि यदि मैं इस कार्य को नहीं करूंगा तो और कौनसा करणीय कर्म है? पूर्ण समर्पण के भाव के साथ संघ कार्य करूं फिर भले ही कितनी भी बाधाएं अथवा संकट आवें। संघ के उद्देश्य को अपना उद्देश्य बनाकर जैसा संघ चाहता है वैसा मैं करता रहूं। इसी भाव एवं संकल्प के साथ पूज्य श्री के बताए मार्ग हमको भी निरन्तर गतिमान रहना है।

स्नेहमिलन, संपर्क यात्रा और संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम

पू. तनसिंह जी के संदेश को हर समाज बंधु तक पहुंचाने के अभियान के तहत 29 अगस्त को बनासकांठा प्रान्त में संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें धानेरा, डीसा व लाखणी तहसील के 20 गांवों में संपर्क किया गया। इसके लिए प्रांतप्रमुख अजीतसिंह कुणघेर ने सहयोगियों के पांच दल गठित किए जिन्होंने विभिन्न गांवों में पहुंचकर संघ के हीरक जयन्ती वर्ष और उसके उपलक्ष में आयोजित हो रही गतिविधियों के सम्बंध में समाजबंधुओं को जानकारी प्रदान की। इस दौरान लवारा, वींछिवाड़ी, रामसण, नांदला, धानेरा, चारडा, जाडी, अनापुर, मालोत्रा, जडिया, भाटीब, गोला, मांडल, सामलवाडा, नेगाला, सिया, आलवाडा, राजोडा, नेनावा, सुरावा आदि गांवों की यात्रा की गई। बनासकांठा प्रांत के वावदरा गांव में भी 10 सितंबर को एक स्नेहमिलन का आयोजन हुआ। बैठक को संबोधित करते हुए प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर ने कहा कि जिस प्रकार गंगा नदी का उद्गम हिमालय में हैं उसी प्रकार क्षात्र धर्म का उद्गम स्वयं परमेश्वर हैं इसीलिए वह कभी भी लुप्त नहीं हो सकता। कार्यक्रम में मातृशक्ति सहित क्षेत्र के समाज बंधु सम्मिलित हुए। हीरक जयन्ती वर्ष के

उपलक्ष्य में संघ तीर्थ दर्शन अभियान के अंतर्गत पाली प्रान्त का 20वां कार्यक्रम पाली के पुराना हाउसिंग बोर्ड स्थित मां भारती शिक्षण संस्थान में 4 सितंबर को आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोड़ता ने कहा कि वर्तमान में हमें अपने आप को मजबूत बनाकर समाज को मजबूत बनाना है। इसके लिए आवश्यक है कि हम क्षत्रियोचित गुणों को अपने जीवन में धारण करें और उसका एकमात्र मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ। संघ के शिविरों में हम स्वयं भी जाएं और अपने बच्चों को भी भेजें तभी समाज को एक सूत्र में बांधने का पूज्य तनसिंह जी का स्वप्न पूरा होगा। कार्यक्रम को जब्बर सिंह गुड़ा, गंगा सिंह सिसरवादा, चंद्रेशपाल सिंह रातड़ी व अजय राज सिंह ने भी संबोधित किया। झुंझार सिंह देणोक ने व्यवस्था में सहयोग किया। इसी क्रम में पाली प्रांत का 21वां तीर्थदर्शन कार्यक्रम रोहट मंडल के खांडी गांव में 8 सितंबर को आयोजित हुआ। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने उपस्थित समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार पुष्प एक क्यारी में उगकर संपूर्ण संसार को सुगंधित करता है, उसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक भी अपने आचरण से सम्पूर्ण समाज के लिए उपयोगी बन सकें, इसका अभ्यास शाखाओं व शिविरों में करते हैं। उन्होंने रामदेव जी का उदाहरण देते हुए कहा कि क्षत्रिय कुल में जन्म में लेकर उन्होंने अपने स्वधर्म का पालन करते हुए सभी के कल्याण हेतु अपना जीवन जिया, इसीलिए आज सभी जाति-समाज के लोग उन्हें अपना पूज्य मानते हैं। हम

भी रामदेव जी, पाबूजी, हड़बूजी, जांभोजी की तरह ऐसे पुष्प बनें जो समस्त संसार में अपनी सुगंध फैलाएं यही पूज्य तनसिंह जी की और क्षत्रिय युवक संघ की चाह है। प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धिंगाणा, भवानी सिंह माडपुरिया, तेज सिंह खांडी ने भी कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। प्रान्त का 22वां तीर्थदर्शन कार्यक्रम 11 सितंबर को मधुरम विद्या मन्दिर, शेखावत नगर, पाली में आयोजित हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ की शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता हमारे समाज को ही नहीं पुरे संसार को है। इस भौतिक युग में केवल अर्थ को ही महत्व देने के कारण हम कौन है, हमारा कर्त्तव्य क्या है, इस बात को हम भूल गये हैं। इस बात को पुनः स्मरण करने के लिए पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की और जीवन भर स्वयं की परवाह किये बिना दुगार्दास जी की तरह त्याग और संघर्ष से परिपूर्ण जीवन जीकर हमको भी स्वधर्म पालन का मार्ग दिखाया। जब्बर सिंह गुड़ा पृथ्वीराज, गंगा सिंह सिसरवादा व लक्षिता सारंगवास ने भी अपने विचार रखे। पाली शहर के एवं विशेष रूप से शेखावत नगर, पंचम नगर, मोहन नगर, मण्डिया रोड़ आदि से समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आयोजन में जितेन्द्र सिंह पिप्पलाद, रघुवीर सिंह आसनमेलडा, बहादुर सिंह जी सारंगवास, देवीसिंह मोरखाना ने सहयोग किया। अजमेर प्रान्त में शापणदा (केकड़ी) में पृथ्वी सिंह शापणदा के निवास पर 29 अगस्त को स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ एक का शेष)

माननीय...

उनके कारण ही हमारे समाज का मस्तक गौरव से ऊंचा रहा है। उसी गौरव को जीवित रखने के लिए संघ की स्थापना हुई है। जो संसार का मार्गदर्शन करते थे, उन्हें राह से भटकते देखकर पूज्य तनसिंह जी के हृदय में जगी पीड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ को जन्म दिया। आगे उन्होंने कहा कि आज के समय में संसाधन बढ़ने से सुविधाएं तो बढ़ गई है लेकिन हमारे पारिवारिक भाव में कमी आई है। आपसी परिचय नहीं है, दूरियां बढ़ गई है। इन दूरियों को हटाने और आपसी मेलजोल व प्रेमभाव को बढ़ाने का प्रयास संघ कर रहा है। इसमें आप सभी का सहयोग आवश्यक है। कार्यक्रम में संभाग के स्वयंसेवक परिवार सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम से पूर्व माननीय संरक्षक श्री द्वारा हिन्दू सिंह म्याजलार द्वारा प्रारंभ किए गये नारायण पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया। 1 सितंबर को माननीय संरक्षक श्री पोकरण पहुंचे जहां प्रान्त के स्वयंसेवकों के पारिवारिक स्नेहमिलन में आशीर्वाद दिया तथा वहाँ से बीकानेर के लिए प्रस्थान किया। 1 से 4 सितंबर तक बीकानेर के में प्रवास पर रहे। प्रवास के दौरान संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में 2 सितंबर को आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज समाज का वातावरण अत्यंत दूषित हो गया है। अपनी महान संस्कृति को छोड़कर इतर संस्कृति का अंधानुकरण करने से सनातन मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अपनी भाषा, पहनावा, परंपरा आदि को हम भूलते जा रहे हैं। यद्यपि हमारे समाज की महिलाओं ने अभी भी हमारी संस्कृति को जीवित रखा है किंतु अब बालिकाओं पर भी इस प्रतिकूल वातावरण का प्रभाव पड़ने लगा है। संघ समाज में संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है और मातृशक्ति को संस्कारित किए बिना समाज संस्कारित नहीं हो सकता। इसीलिए स्नेहमिलनों, शाखाओं व शिविरों के माध्यम से संघ हमारे समाज की महिलाओं को संस्कारित करने का प्रयत्न कर रहा है। महिलाओं में जो गुण हैं वे पुरुषों के पास नहीं है। उनके त्याग की बराबरी पुरुष नहीं कर सकता। दंपति शिविरों के आयोजन से परिवारों में वातावरण बदल रहा है व आपसी विश्वास व प्रेम बढ़ा है। महिलाओं को साथ लिए बिना समाज का रूपांतरण सम्भव नहीं है। उनको भी इस कार्य में सहभागिता का अवसर मिलना चाहिए। हम अपनी बालिकाओं को अधिक से अधिक संघ के शिविरों में भेजेंगे तभी हमारी अगली पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित हो सकेगा। कार्यक्रम में शहर में रहने वाले स्वयंसेवक सपरिवार सम्मिलित हुए। माननीय संरक्षक श्री 4 सितंबर को प्रातः बीकानेर से रवाना होकर नोखा होते हुए नागौर पहुंचे जहां प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल के निवास स्थान पर स्वयंसेवकों से मिले। उनसे चर्चा के पश्चात कुचामन सिटी स्थित साधना संगम संस्थान के कार्यालय आयुवान निकेतन में कुचामन प्रांत के स्वयंसेवकों के साथ बैठक की तथा उन्हें संघकार्य में निष्ठापूर्वक लगे रहने का संदेश दिया। शाम को वयोवृद्ध स्वयंसेवक छोटू सिंह जाखली के आवास पर पहुंच कर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली तथा बलजीत सिंह नाथावतपुरा के आवास पर कुछ देर रुक कर पुनः आयुवान निकेतन पहुंचें। रात्रि विश्राम के पश्चात 5 सितंबर की सुबह माननीय संरक्षक श्री ने लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के सांवराद गांव पहुंचकर वरिष्ठ स्वयंसेवक जवान सिंह सांवराद के देहांत पर उनके परिजनों को सांत्वना प्रदान की। इसके पश्चात वापसी में सिंघाना में जगदीश सिंह सिंघाना तथा रसाल में सुनील सिंह के आवास पर रुके तथा दोपहर 1:00 बजे आयुवान निकेतन से जयपुर के लिए रवाना हुए। अपने प्रवास के अगले चरण में और जयपुर पहुंचे। वहां 6 से 8 तक केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में रहे और संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास, श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी, वयोवृद्ध स्वयंसेवक दीपसिंह बैण्यांकाबास के साथ संघ कार्य बाबत विस्तार से चर्चा की। जयपुर में निवासरत स्वयंसेवक भी इस दौरान माननीय संरक्षक महोदय का सानिध्य प्राप्त करने पहुंचे और आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। 8 सितंबर को प्रसिद्ध आर्य समाजी संत धर्मबंधु जी संघशक्ति पहुंचे और आवश्यक आध्यात्मिक चर्चा की। 9 सितंबर को जयपुर से रवाना होकर अजमेर पहुंचे। वहां स्वास्थ्य के नियमित निरीक्षण बाबत चिकित्सकों से मिले। अजमेर स्थित मैजर शैतानसिंह राजपूत छात्रावास में समाज बंधुओं से मिले। वहां से जोधपुर के लिए प्रस्थान किया। जोधपुर स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में शाम 6 बजे पारिवारिक स्नेहमिलन में शामिल हुए। स्नेहमिलन में उपस्थित संभागीयों को संबोधित करते हुए संरक्षक महोदय ने कहा कि यह आंशिक सत्य है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज निर्माण का कार्य कर रहा है जबकि संपूर्ण सत्य यह है कि संघ व्यक्ति निर्माण का कार्य है। व्यक्ति को बदल कर संसार को बदलने का कार्य है। उन्होंने कहा कि इस संकल्प के साथ जिएं कि हमें शताब्दियों तक जीना है और इस हेतु मरकर पुनः यहीं आना है। हमारे शास्त्र कहते हैं कि मृत्यु के समय जो स्मरण रहता है उसी के अनुरूप आगे का जीवन मिलता है। इसलिए जिनके जीवन में क्षण प्रतिक्षण संघ का स्मरण बना रहता है उन्हीं का जीवन शताब्दियों का जीवन बन पाएगा और ऐसे ही लोग संघ को चला पायेंगे। उन्होंने कहा कि अपने अंतर को देखें और अपने दुश्मन को पहचाने। जो आपके अंतर का दुश्मन है वही संसार का दुश्मन है। अपने आपको देखने के लिए सत्संग आवश्यक है, ऐसे सत्संग की नियमितता और निरंतरता से ही अंतर में परिवर्तन संभव है इसलिए सत्संग के अवसर ढूंढें। मैं और मेरा की आदत छोड़कर सब भगवान का है, इसे स्वीकार करें और यह भी स्वीकार करें कि सब भगवान की योजना से हो रहा है। इस योजना में जब भी हम टांग अड़ाने की कोशिश करते हैं तब तब गड़बड़ होती है। इन सब बातों को समझने में ऐसे मिलन सहयक होते हैं और यही इन स्नेहमिलनों का उद्धेश्य है। रात्रि विश्राम जोधपुर करने के बाद 10 सितंबर को प्रातः संरक्षक महोदय ने बाड़मेर के लिए प्रस्थान किया।

समारोहपूर्वक...

कार्यक्रम में पूर्व सांसद मानवेन्द्र सिंह जसोल, पूर्व विधायक छोटू सिंह भाटी, पूर्व विधायक सांग सिंह भाटी, फतेहगढ़ प्रधान जनक सिंह, वरिष्ठ स्वंय सेवक गंगा सिंह तेजमालता, रेमन्त सिंह झिनझिनयाली, बाबू सिंह बैरसियाला, सांवल सिंह मोढ़ा, छुग सिंह गिराब, कँवराज सिंह गोरडिया, गनपत सिंह अवाय, चित्रा सिंह जसोल सहित सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन ईश्वरसिंह बेरसियाला ने किया।

जीवट की धनी वधु बा का निधन

गुजरात के कच्छ जिले की लखपत तहसील के पुनराजपर गांव की वधु बा का 6 सितंबर को देहावसान हो गया। 97 वर्षीय वधु बा का जीवन जीवट का पर्याय और प्रेरणा का पुंज था। कच्छ के गोचर गांव के कल्याणसिंह की पुत्री वधु बा का विवाह 1950 में

प्रतापसिंह जडेजा से हुआ, विवाह के बाद ससुराल आते समय मार्ग में ही पति का देहांत हो गया और वे विधवा के रूप में ही ससुराल में प्रविष्ट हुईं। ससुराल में दो छोटे देवरों के अलावा कोई नहीं था। वधु बा ने इन परिस्थितियों में पीहर का रुख नहीं किया बल्कि उजड़े हुए ससुराल को ही अपनी नियति मान कर दोनों देवरों की जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ी और उन्हें माता की तरह पाल पोस कर उनका परिवार बसाया और उजड़े हुए परिवार को आबाद कर दिया। वधुबा के इस प्रेरणादायी जीवन को कच्छ महिला क्षत्रिय महासभा द्वारा 4 अक्टूबर 2019 को सम्मानित किया गया।

(पृष्ठ छः का शेष)

स्नेहमिलन...

बैठक को संबोधित करते हुए केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली द्वारा प्रान्त में हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में अधिकाधिक गतिविधियां आयोजित करके समाजबंधुओं से संपर्क करने की बात कही गई। बैठक के दौरान प्रान्त में इस सत्र में अब तक हुई सांघिक गतिविधियों पर भी चर्चा की गई। आगे के लिए विभिन्न स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे गए तथा प्रान्त में स्नेहमिलन, विचार-गोष्ठियों व संपर्क यात्राओं के आयोजन की योजना निश्चित की गई। अक्टूबर माह में एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी तय हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक कर्नल हिम्मतसिंह पीह व विजयराज सिंह जालिया भी स्वयंसेवकों व स्थानीय समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सीकर के पालवास में भी 5 सितंबर को स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रान्त प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के सम्बंध में जानकारी देते हुए कहा कि संघ आज हमारे समाज की उस आवश्यकता को पूरी करने का कार्य कर रहा है जिसके लिए अन्य कोई प्रयत्न नहीं कर रहा है। वह आवश्यकता है समाज की युवा पीढ़ी को स्वधर्मपालन का सही अर्थ समझाकर उसके लिए प्रशिक्षित करने की। भंवर सिंह नाथावतपुरा ने दुर्गा महिला संस्थान के संबंध में जानकारी दी। नंद सिंह भेड़ ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। 5 सितंबर को ही उदयपुर के ओस्तवाल नगर स्थित खारड़ा हाउस में मेवाड़ वागड़ व मेवाड़ मालवा संभाग के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की संयुक्त बैठक केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली व रेवन्त सिंह पाटोदा की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। इस दौरान दोनों संभागों में शाखाओं व शिविरों पर चर्चा के साथ ही श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की गतिविधियों पर भी चर्चा की गई। संभागप्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा व भंवर सिंह बेमला स्वयंसेवकों सहित बैठक में उपस्थित रहे। गुजरात में बनासकांठा प्रान्त के मेजरपुरा गांव में स्नेहमिलन कार्यक्रम 12 सितंबर को आयोजित हुआ। रामसिंह धोता सकलाणा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस दौरान सेना में जाने के लिए तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षण का भी आयोजन हुआ जिसमें 90 युवाओं ने भाग लिया। 12 सितंबर को ही कर्नाटक में बैंगलोर स्थित श्री राजपूत समाज भवन, रानासिंहपेट में राव जैताजी की जयंती मनाई गई जिसमें प्रान्त के स्वयंसेवकों ने वीर शिरोमणि जैताजी को स्मरण करके अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

जवानसिंह जी सांवराद का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **जवानसिंह जी सांवराद** का 29 अगस्त को देहावसान हो गया। आप नागौर के बोरावड़ में 1955 में आयोजित शिविर में संघ के संपर्क आये थे। आपके पुत्र जितेन्द्र सिंह ने विगत चुनावों में डीडवाना से भाजपा के टिकट पर विधायक का चुनाव लड़ा था।

जवानसिंह जी सांवराद

कैप्टन नरपत सिंह झाझड़ का देहावसान

झुंझुनूं जिले में संघ कार्य में सदैव सक्रिय सहयोगी की भूमिका निभाने वाले एवं युवा स्वयंसेवक आदित्य प्रताप सिंह झाझड़ के दादोसा **कैप्टन नरपत सिंह झाझड** का 31 अगस्त को 89 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आपके परिवार के सभी बच्चों ने संघ के शिविर किए हैं एवं आपके सहयोग से नवलगढ़ क्षेत्र में अनेक शिविर लगे।

कैप्टन नरपत सिंह झाझड

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती बदन कंवर पत्नी
श्री शंभुसिंह खेतासर

जोधपुर में संपन्न पंचायती राज चुनावों में

श्रीमती बदन कंवर पत्नी
श्री शंभुसिंह खेतासर

के पंचायत समिति **ओसियां के प्रधान**

एवं

श्रीमती राजेंद्र कंवर पत्नी श्री
विशालसिंह अणवाणा

के पंचायत समिति **बावड़ी के उप प्रधान**

निर्वाचित होने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

श्रीमती राजेंद्र कंवर पत्नी
श्री विशालसिंह अणवाणा

शुभेच्छुः

नाथुसिंह, सरपंच बापिणी

बाबूसिंह उदावत, सैनिक नगर ओसियां

बलबीर सिंह, सरपंच तापु

हुकमसिंह भाटी पड़ासला

मोहन सिंह भाखरी

पदमसिंह ओसियां

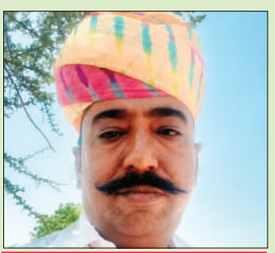

रामसिंह भाटी तेजानगर नेवरा

ठाकुर अर्जुनसिंह किंजरी

भवानीसिंह सरपंच बारां

जालमसिंह भेड़

दौलतसिंह भीमसागर

मनोहरसिंह भीकमकोर, पूर्व जिलाध्यक्ष सरपंच संघ जोधपुर

ओंकारसिंह उदावत, धुंधाड़ा

समुंदर सिंह तिंवरी

मांगवेन्द्र सिंह तापु

महिपाल सिंह चिंदड़ी

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाषः 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org